गौ–संरक्षण वैज्ञानिक आंदोलन है, अंध भक्ति नहीं।

–स्वामी अग्निवेश

मनुष्य के वे सभी क्रियाकलाप अधार्मिक हैं, जो दूसरो को किसी भी रूप में (मनसा, वाचा, कर्मणा) हानि पहुंचाते हैं। और वे सभी कार्य धार्मिक हैं, जो दूसरो को लाभ पहुंचाने वाले है। स्वामी दयानंद की इन पक्तियों को गौरक्षा के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। वर्तमान में गाय की रक्षा के दायित्व को कुछ तथाकथित धार्मिक सेनाओं और उनके राजनीतिक आकाओं ने हथिया लिया हैं। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सत्तातंत्र भी इसमें शामिल हो गया है और जब सत्ता मुद्दों का निर्धारण करने लगे तो उसके पीछे निहित स्वार्थ को समझना भारत जैसे धार्मिक, भाषाई, विविधता वाले देश में और अधिक आवश्यक बन जाता है। गोवंश की रक्षा धार्मिक ना होकर एक आध्यात्मिक मसला है और आध्यात्मिकता का सम्बन्ध विशुद्ध रूप से प्रकृति और उसकी विशालता से जुड़ा है। चूंकि सभी मुनष्यों का प्रकृति से, उसकी विशालता से अबाध और आत्मिक सम्बध है, तो गाय और गोवंश की रक्षा का उत्तरदायित्व भी सभी की बनती है न कि धर्म विशेष के ठेकेदारों की।

पिछले दिनों मुझे उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के चिलकाना गांव जाने का, लोगों से जुड़ने का अवसर मिला। सहारनपुर लकड़ी से बनी वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध हैं पर ग्रामीण इलाका काफी हरा भरा है। दरअसल मुझे वहां जैविक खेती पर किसानों के बीच अपने विचार रखने थे। लेकिन पहले मैं वहां के ग्रामीण भाइयों–बहनों, किसानों की चिंता और आशंकाओं को आपसे साझा करना चाहूंगा। मुझसे पूर्व विचार रखने वाले अधिकतर वक्ताओं ने *"जैविक खेती बहुत अच्छी है, फायदेमंद है और इसे अपनाना चाहिए"* कहकर बैठ गये। जैविक कृषि के माहिर डॉ० महिपाल जी ने खेती में रासायनिक खाद्य एवं कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग से होने वाली भयानक बीमारियों, पर्यावरणीय नुकसान और आर्थिक हानियों आदि के बारे में विस्तार से बताया। एक किसान मित्र ने अपना अनुभव बताया कि कैसे रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों द्वारा खेती करना उनके लिए संकट बन गया है। यहां तक कि वो अपने बच्चों के पढ़ाई का खर्चा भी नहीं निकाल पा रहे हैं। बीच में एक पत्रकार महोदय ने यह भी बताया कि कैसे कुछ हिंदू दलित युवक हरियाणा आदि जगहों से गाय लाकर मुस्लिम भाइयों को बेचते हैं। पर हत्या का आरोप सिर्फ एक पर ही लगता है। इन सभी मुद्दों का समाधान टुकड़ों में नहीं मिल सकता।

गौवंश संरक्षण आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी दयानंद ने इसका समाधान वैज्ञानिक और आज के उपयोगितावादी तर्कों के आधार पर लगभग 150 वर्ष पूर्व सुझाया था। अपनी पुस्तक गोकरूणानिधि में उन्होंने गाय के लिए गोमाता शब्द का प्रयोग नहीं किया। गो शब्द के दो अर्थ बताए प्रथम गाय और दूसरा अर्थ पृथ्वी से है। गाय और पृथ्वी दोनों के युक्तिसंगत जुड़ाव, उपयोग और संरक्षण ही मानव सभ्यता का मूल है। दुर्भाग्य से हमारा इन दोनों से सम्बंध अवैज्ञानिक, अतार्किक और विनाशक प्रवृत्ति का रहा है, यही कारण है कि हमें पर्यावरण विनाश से बचने हेतु आज तरह–तरह के उपाय करने पड़ रहे हैं। दिल्ली में ऑड–इवेन नीति इसका ताजा उदाहरण है। वास्तव में जब तक हम गाय और खेती दोनों को लाभकारी नहीं बनाते हैं, तब तक इनके संरक्षण की बात करना बेमानी है।

सेहत के प्रति चिंता ने अवश्य ही जैविक खेती की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षिक किया है। किन्तु इस खेती से प्राप्त उत्पाद अधिक महंगे होने के कारण अमीरों के लिए ही सुलभ हैं। सामान्य व्यक्ति का इस तरह के उत्पादों से कोई जुड़ाव नहीं, वह तो सिर्फ जैविक तरीकों से प्राप्त उत्पादों के लाभ के बारे में केवल सुनता है और कोई भी समाज केवल सुनने के आधार पर किसी नई व्यवस्था को नहीं अपनाता। किन्तु अधिक दाम मिलने के कारण किसान जैविक खेती के बारे में जानने और समझने को उत्सुक है। परन्तु गाय अभी भी धार्मिक मुद्दा ही है। ऐसे दौर में जब बोझ स्वरुप मानकर लोग अपने स्वयं के मां–बाप को काशी या वृन्दावन में छोड़ देते हों तो बिना लाभ के एक पशु को वे कैसे अपना सकते हैं। गाय और गोवंश की रक्षा उनके आर्थिक रूप से लाभकारी होने पर ही सम्भव है। गोवंश की रक्षा दो तरीके से सम्भव है, पहला राष्ट्रीय स्तर पर कड़े कानून बनाकर और दूसरा उपयोगिता एवं जन जागृति को बढ़ाकर। कानून में गाय की हत्या करने वाले के लिए कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान हो। साथ ही साथ उस व्यक्ति को भी बराबर का दोषी माना जाय जो उसे बेचता हो। क्योंकि हिंदू गाय बेचना जब तक बंद नहीं करेंगे तब तक उनकी हत्या को रोकना मुमकिन नहीं। गोबर व गोमूत्र से होने वाले फायदों के बारे में बताना होगा। दूध के समान ही गोबर व गोमूत्र एकत्रीकरण की व्यवस्था सरकार द्वारा अथवा कतिपय स्टार्ट अप उद्यमियों द्वारा की जाए। गोमूत्र व गोबर से होने वाले लाभों को कृषि तथा आयुर्वेदिक दोनों स्तर पर लोगों को टी०वी० चैनलों द्वारा बताया जाए। अधिक से अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाय जिससे लोगों में गोवंश के प्रति जागरूकता पैदा हो। जैविक कृषि में गोमूत्र व गोबर से बने खाद्य व कीटनाशकों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाय। ध्यान रहे कि जैविक कृषि के लिए देशी नस्ल के गोवंश के मूत्र व गोबर ही उपयोगी है, अन्य पशुओं के नहीं। गोवंश की मृत्यु के बाद उन्हें दफनाया जाए जिससे की मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़े और उस पर फलदार, छायादार वृक्षारोपण हो।

अंत में सरकार 2000 रुपया प्रति गोवंश किसान को भत्ता दे, जिससे वह अलाभकारी गोवंशकों की देखभाल कर सके। इस तरह जब कृषि एवं गोवंश एक–दूसरे के पूरक और लाभकारी होंगे तो उनका संरक्षण सभी सम्प्रदाय के किसान करना चाहेंगे। मेरा मानना है कि किसान पहले किसान होता है, सम्प्रदाय का सदस्य बाद में। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी तरह अन्य पशुओं जैसे बकरी, भैंस, ऊँट आदि के संरक्षण पर भी जोर दिया है, ताकि मनुष्य पुनः सात्विक, सदाचार एवं शाकाहार की प्रकृति का अभिन्न अंग बन जाए, जहां एक–दूसरे का जीवन ही जीने का, समृद्धि का, विकास का, अध्यात्म का और अन्त में मोक्ष का आधार बन सके।

E-mail :- agnivesh70@gmail.com

दूरभाष : 011.2336 7943

दिनांक : 19 जनवरी, 2016